नीरगंधा
चन्द्रभाल 'सुकुमार'

नीरगंधा

चन्द्रभाल 'सुकुमार'

प्रवीण प्रकाशन

नई दिल्ली-110030

आपाढ़ की प्रथम घटा को

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः ।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः ॥

भूमिका

अविराम वेदना के क्षणों में गजल जन्म लेती है। हिन्दी में गजल का इतिहास अधिक पुराना नहीं है किन्तु एक महत्त्वपूर्ण काव्य-विधा के रूप में गजल हिन्दी में प्रतिष्ठित हो चली है। 'नदी के निकट' मेरा प्रथम हिन्दी गजल-संग्रह था जो अपने अभिनव प्रयोगों के कारण गजलप्रेमियों के बीच थोड़ा-बहुत चर्चित भी रहा। 'नीरगंधा' मेरी हिन्दी गजलों का दूसरा संग्रह है।

'प्रवाह' और 'त्रिवेणी' इस संग्रह के दो अनुभाग हैं।

'प्रवाह' में मैंने 'नदी' के प्रतीक को लेकर अपने विचारों को शब्दाकृति प्रदान की है। आती-जाती-गाती-बलखाती-हंसती-मुस्कुराती-रूठती मनाती नदी ! 'नदी' के नाना रूपों में प्रवाहित भाव-सौन्दर्य को लेखनी में अनुबद्ध करने का मेरा यह प्रयास कितना सफल-सार्थक हुआ है, यह आपका विषय है।

'त्रिवेणी' की त्रिछंदा गजलें एक नये शिल्प और शैली की खोज में सृजित हुई हैं। भावनाओं के शब्दमुखी रुद्राक्ष की यह गजल-माला आपके 'शिवत्व' को निरंतर अभिषिक्त करती रहे, यही कामना है।

समस्त पारिवारिक जनों, मित्रों, पाठकों एवं प्रकाशक भाई श्रीकिशन गुप्त जी के प्रति आभार प्रकट करना औपचारिकता का निर्वाह नहीं वरन् हार्दिक अनुभूति की अभिव्यक्ति मात्र है।

—चन्द्रभाल 'सुकुमार'

अपर जनपद एवं सत्र न्यायाधीश,
जे-3, न्यायालय-परिसर,
मथुरा-281001

क्रम

प्रवाह

प्रवाह

अब इतराती नहीं नदी
पाठ पढ़ाती नहीं नदी

भीड़ भरे या सूने तट
आंख उठाती नहीं नदी

सांझ कहानी है दुख की
कभी बताती नहीं नदी

डूब गये हैं सारे पथ
पर घबराती नहीं नदी

अनशन किए नदी कोई
मन को सिए नदी कोई

नव संस्कृति के जंगल में
कैसे जिए नदी कोई

आज सड़क पर लेटी है
आसव पिए नदी कोई

कौन भगीरथ-सा लाए
मेरे लिए नदी कोई

अमित कल्पना भरी नदी
भावों की मदकरी नदी

कौन आचमन करे यहां
कह देगी वावरी नदी

कल-कल करती रहती है
वर्तमान से डरी नदी

कालिदास के छंदों-सी
लगती है किन्नरी नदी

अरुणोदय नयन नदी के
नव किसलय नयन नदी के

ढूंढ़ते किसे युग-युग से
खो परिचय नयन नदी के

सावन भर छलकाते हैं
मधु अक्षय नयन नदी के

अभिशाप किसी का तो है
विस्मृति-लय नयन नदी के

आह चिंगारी नदी है
भाग्य की भारी नदी है

वत्सला है यह धरित्री
एक किलकारी नदी है

याद कर अभिसार के पल
आज भी प्यारी नदी है

जल रहीं तट पर चिताएं
पर नहीं हारी नदी है

इतना न हो कठोर नदी
देखो मेरी ओर नदी

मुझे प्रणय का अनुभव है
तू है अभी किशोर नदी

डूबेगी तू भी जल में
पानी चारों छोर नदी

प्यासे जीते मरते हैं
मधुकर और चकोर नदी

उन्मद धार नदी पागल
भग्न कगार नदी पागल

जाने कब से बैठी है
खोले द्वार नदी पागल

टूट गए इस सावन में
स्वप्न हजार नदी पागल

मना रही है मरघट में
नित त्योहार नदी पागल

एक कहानी हुई नदी
फिर अन्जानी हुई नदी

चिह्न मिटे अभिसारों के
बात पुरानी हुई नदी

सागर की चर्चा सुनकर
पानी-पानी हुई नदी

उड़ती दूर हवाओं में
चूनर धानी हुई नदी

करती मुझसे बात नदी
लहराती दिन-रात नदी

खेल खेलती जीवन के
सहती सौ आघात नदी

पावस में हो गयी हरी
पतझर में कृशगात नदी

चिपके केश कपोलों पर
जैसे सद्यःस्नात नदी

कल्पना बहती नदी है
कब, कहां बंधती नदी है

छोड़कर हिमशिखर निर्मल
सिन्धु में मिलती नदी है

कभ उत्तर, कभी दक्षिण
फेर मुंह हंसती नदी है

बैठ तरु की छांह कोमल
उपनिषद पढ़ती नदी है

कल-कल छल-छल बहे नदी
सबकी पीड़ा सहे नदी

नित्य-नवीन प्रवाहों में
गाथा नूतन कहे नदी

शीतल अन्तर ज्वाला में
तपस्विनी-सी दहे नदी

सुख का आंचल लहराती
युग-युग गतिमय रहे नदी

कूदती-गिरती नदी हो
ढूंढ़ती-फिरती नदी हो

बैठकर वन में अकेली
साधना करती नदी हो

क्या पता क्या पीर लेकर
नीर में रहती नदी हो

घर वहां मेरा बनाना
सामने बहती नदी हो

काली रात नदी भोली
दूर प्रभात नदी भोली

घायल हिरणी-सी लगती
रक्तस्नात नदी भोली

नहीं किसी से कह पाती
मन की बात नदी भोली

शायद घन इस बार करें
कुछ उत्पात नदी भोली

गाती मेरे संग नदी
बनकर नवन उमंग नदी

छूकर बादल लौट गया
कोई कोमल अंग नदी

इन्द्र धनुष आंचल नभ का
भरती कितने रंग नदी

मन तो चंचल धारा है
तन है एक तरंग नदी

जलन और अवसाद नदी
कुण्ठा और विषाद नदी

मेघों की कविताओं का
करती है अनुवाद नदी

मेरे हृदय - मरुस्थल में
जैसे तेरी याद नदी

डमरू की चौदह ध्वनि में
गुंजित तेरा नाद नदी

जलती है जलमयी नदी
काल कथा हो गयी नदी

पल-पल रूप बदलती है
दिन-दिन लगती नई नदी

मन्द पवन की बातों पर
हंसती है किसलयी नदी

पावस की पद-ध्वनि सुनकर
यौवन भीता हुई नदी

देर तक सोई नदी है
हर गजल कोई नदी है

प्रिय-विरक्त शकुंतला-सी
याद में खोई नदी है

आज पहला दिन शरद का
चांदनी-धोई नदी है

क्या पता कब मुस्कराई
और कब रोई नदी है

दीखता प्लावन नदी में
भर उठा सावन नदी में

ढूंढ़ते हैं ताजगी का
लोग विज्ञापन नदी में

किस जगह बांधूं तरणि को
धार हैं बावन नदी में

जल प्रदूषित हो चला है
व्यर्थ अवगाहन नदी में

दृग में छायी एक नदी
मन को भायी एक नदी

कैसे ठुकरा दूं निर्मम
घर में आई एक नदी

जगती स्वप्निल लहरों में
ले अंगड़ाई एक नदी

दर्द अनोखा सावन का
भुला न पायी एक नदी

नमन तुम्हें सौ बार नदी
धवल तुम्हारी धार नदी

जड़ चेतन को एक सदृश
करती हो तुम प्यार नदी

नव भावों, नव छन्दों का
देती हो उपहार नदी

तेरा दर्शन दर्शन है
गति में मंत्रोच्चार नदी

नींद चुराती रोज नदी
मुझे लुभाती रोज नदी

मेरे आंगन से उड़कर
आती जाती रोज नदी

मौन विदा लेती किससे
हाथ हिलाती रोज नदी

मीन-दृगी मदिरा पीकर
जी बहलाती रोज नदी

पहला प्यार नदी का है
रूप उधार नदी का है

नयनों में मोहक मदिरा
नव श्रृंगार नदी का है

अंग-अंग में बर्तन है
झंकृत तार नदी का है

कई दिनों से सुनता हूँ
बहुत प्रचार नदी का है

पीर में पलती नदी है
हिमशिला गलती नदी है

आश्रमों के पांव छूती
शाप में जलती नदी है

रेत की रचना अनोखी
अनवरत चलती नदी है

नित्य लेती जन्म नूतन
मृत्यु को छलती नदी है

प्रीति-उन्मादिनी नदियां
सिन्धु-अनुगामिनी नदियां

कभी चौपाई लगीं तो
कभी कामायनी नदियां

हिमशिलाओं की कहानी
ताप-उत्पादिनी नदियां

दीखती हैं आज कल से
और अनुरागिनी नदियां

बजा रही रागिनी नदी
रूठी है मानिनी नदी

धवल पूर्णिमा का अंबर
लाज-भरी कामिनी नदी

चंचल चारु तरंगों में
हंसती है दामिनी नदी

कोई सूना तट पाकर
सोती गजगामिनी नदी

बहो क्षितिज के पार नदी
छली बहुत संसार नदी

टूटे मन को जोड़ेगी
तेरी ही झंकार नदी

बुला रहा है दूर जलधि
मिलन एक त्यौहार नदी

भेद नहीं मुझमें-तुझमें
मैं पानी, तू धार नदी

भादों-सावन नदी नहीं
अब मनभावन नदी नहीं

उपमा बने तुम्हारी जो
ऐसी पावन नदी नहीं

प्रथम सर्ग - सा जीवन के
मोहक प्लावन नदी नहीं

करती है स्वीकार सहज
हर अभिवादन नदी नहीं

भू-आकाश नदी तो थी
सृजन-विनाश नदी तो थी

कुछ पीड़ा, कुछ आंसू-कण
कुछ उल्लास नदी तो थी

ध्यान नहीं दे पाया मैं
तनिक उदास नदी तो थी

दूर रहा सागर लेकिन
मेरे पास नदी तो थी

मत कहीं थकना नदी री
मत कहीं थमना नदी री

चोटियों की चोट सहकर
रात-दिन बहना नदी री

छोड़ सम्मोहन जलधि का
झूमती रहना नदी री

जल उठा क्यों भाल शिव का
क्या हुई घटना नदी री ?

मन हो रहा अधीर नदी
छूकर तुम्हें समीर नदी

लौट गया तेरे तट से
प्यासा एक फकीर नदी

आशीर्वाद तुझे देंगे
बूढ़े बरगद, कीर नदी

कितने बादल सजल हुए
लेकर तेरी पीर नदी

मेरे मन की प्यास नदी
श्लेष-यमक-अनुप्रास नदी

अच्छी लगती कभी-कभी
थोड़ी-बहुत उदास नदी

मखमल-सी कोमल लड़की
बांट रही उल्लास नदी

सोने देती नहीं मुझे
बहती घर के पास नदी

मेरा जीवन नीर नदी
मेरे मन में पीर नदी

किन कूलों में बांधूंगा
प्रलय-प्रवाह्-अधीर नदी

बीते रंग-बिरंगे पल
जल में डूबा तीर नदी

दुर्योधन के वंशज तट
घटता-बढ़ता चीर नदी

मुझे नहीं अवकाश नदी
बैठूं तेरे पास नदी

आज धरा की बांहों में
बंदी है आकाश नदी

तू फूलों की गंध-भरी
मैं तरु एक उदास नदी

ऐसे भी होते बादल
बुझती मन की प्यास नदी

मैं हूं केवल और नदी
गीत गजल जल और नदी

प्रणय कथा लिखता पावस
काला बादल और नदी

चलो यहां से सांझ घिरी
नभ है विह्वल और नदी

सब कुछ लेकर दो मुझको
पुस्तक, परिमल और नदी

मैं गाता गीत नदी के
दुहराता गीत नदी के

मुझसे क्यों हो न सका यह
ठुकराना गीत नदी के

कूलों से निभा रहे हैं
क्या नाता गीत नदी के

चुपके-चुपके जीवन - भर
सुन पाता गीत नदी के

रुक्मिणी-राधिका नदियां
डूबती द्वारिका नदियां

गुनगुनातीं घाटियों में
कौन-सी गीतिका नदियां

घुट रहीं ऊंचे तटों में
न्याय की याचिका नदियां

थका-हारा चांद सोया
मखमली शायिका नदियां

वर्षाकाल नदी चंचल
टूटी डाल नदी चंचल

हलचल मची मछलियों में
खाली जाल नदी चंचल

गांव-गांव में पानी है
डूबा ताल नदी चंचल

सुलझाती है जीवन के
गूढ़ सवाल नदी चंचल

वंदना अक्षय नदी की
गीत-लय-गति-मय नदी की

टूटती पल-पल संवरती
धार है निर्भय नदी की

कर रहा सागर उमड़कर
अर्चना-अनुनय नदी की

क्यों न हो उन्माद-गंधा
प्रीति की है वय नदी की

सब छली नदियां यहां की
हैं भली नदियां यहां की

कृष्ण की आराधिका हैं
सांवली नदियां यहां की

याद हैं मधुमास को भी
मनचली नदियां यहां की

रेशमी वातावरण में
हैं पली नदियां यहां की

त्रासदी, संत्राश नदियां
ढो रही हैं लाश नदियां

बादलों के पांव छूकर
हो गईं आकाश नदियां

महानगरों में लुटातीं
गांव का उल्लास नदियां

सांझ की वेला निकट है
दे रहीं आभास नदियां

त्रिवेणी

अब हवा की धांधली तो देखिए
इस तरह कुछ दिन चली तो देखिए

हर लिपिक की टिप्पणी प्रतिकूल है
प्रीति की पत्रावली तो देखिए

आप उत्तर दीजिएगा कल मुझे
ध्यान से प्रश्नावली तो देखिए

आंख में आता न पानी
अब गजल हो या कहानी

मौलवी के घर मिली है
एक रामायण पुरानी

कवच - कुण्डल के बिना तो
कर्ण भी होता न दानी

आंख से आई अधर तक बात
घूमकर सारे शहर तक बात

क्या कहूं इन घाटियों से मित्र
है अभी ऊंचे शिखर तक बात

सूर्य का स्वागत करेगा कौन
चल रही है दोपहर तक बात

आज कांटों से गुलाबों ने कहा है कुछ
चुप कलम, शायद किताबों ने कहा है कुछ

एक टुकड़ा बादलों का फेंककर नभ पर
चांद से उड़ते नकाबों ने कहा है कुछ

बांध कर साड़ी निशा लेती विदा होगी
जागती है नींद, ख्वाबों ने कहा है कुछ

आप पढ़कर मत इसे लें अन्यथा
यह हकीकत हो भले ही, है कथा

है अंधेरा ही अंधेरा हर तरफ
माथ पर है आप के आंचल वृथा

जानता हूं किन्तु कैसे छोड़ दूं
जिन्दगी है महज जीने की प्रथा

इस तरह पाले पड़े हैं रात-भर
नींद के लाले पड़े हैं रात-भर

आज फिर इस दर्द की दीवार पर
याद के जाले पड़े हैं रात-भर

मुस्कुराती सुबह तो आई मगर
पांव में छाले पड़े हैं रात-भर

कब तलक संवेदना सहते रहेंगे हम
दर्द के आवर्त में बहते रहेंगे हम

आप के फेंके हुए इन पत्थरों पर भी
एक खजुराहो नया गढ़ते रहेंगे हम

मेघमय आकाश देखा है कभी तूने
जल लुटाकर अन्ततः जलते रहेंगे हम

कल्पना, इतिहास क्या - क्या चाहिए
छंद, लय, अनुप्रास क्या - क्या चाहिए

मन विकल है आज फिर से मांग लो
तिलक औ' बनवास क्या - क्या चाहिए

कुछ शिवालय, कुछ शवालय हों बने
इस नदी के पास क्या - क्या चाहिए

कह रहा जो भी मिला
आदमी हूं या शिला

जिंदगी के नाम पर
सांस का यह सिलसिला

शक्ति हूं हनुमान की
याद जो मुझको दिला

कांटों में गुलाब मुस्क्याता है
विष-चन्दन का कैसा नाता है

मेरा मन है एक प्रतीक्षालय
कोई आता कोई जाता है

गीत-गजल या कथा-कहानी हो
शब्द वेदना को सहलाता है

किस कदर खुशनशीब हैं ये डाक के टिकट
मुझसे अधिक करीब हैं ये डाक के टिकट

दिखती कहीं न आज वह संवेदना, हंसी
खाली बही, मुनीब हैं ये डाक के टिकट

है खूब याद अक्षरोंवाली गली अभी
संबंध के सलीब हैं ये डाक के टिकट

क्या करूंगा आज वह उन्माद लेकर
जा रहा हूं दूर तेरी याद लेकर

एक अक्षयवट गिराने के लिए अब
वे खड़े पूरा इलाहाबाद लेकर

आज मौलिकता पढ़ाने में लगे हैं
जो स्वयं पढ़ते रहे अनुवाद लेकर

गंगा मेरे माथ पर लिपटे गले भुजंग
तू तो गौरी की तरह बसती है हर अंग

जन्म पत्रिका देखकर हुआ ज्योतिषी मौन
फूल-शूल मधु-गरल-सा तेरा मेरा संग

थक कर बैठा नवयुगल दूर विटप की छांह
डाली पर से उड़ गया बूढ़ा चतुर विहंग

गजल कोई प्यार की मैंने पढ़ी तो थी
सतसई श्रृंगार की मैंने पढ़ी तो थी

बीच धारा में तरणि, तूफान की हलचल
जल कथा अभिसार की मैंने पढ़ी तो थी

क्यों हुए मेरे अधर निस्पन्द-से इतने
रीति मंत्रोच्चार की मैंने पढ़ी तो थी

गीत सुबह् शाम के
प्रार्थना, प्रणाम के

चित्र खींचता विटप
छांह् और घाम के

कंठ में जह्र लिए
कवि तो हम नाम के

चीरती कितना अंधेरा यह गजल
ला रही जैसे सवेरा यह गजल

ज़िंदगी के रेशमी रूमाल पर
काढ़ती है नाम तेरा यह गजल

बीन बनकर ढूंढ़ती है हर तरफ
आज नागों का बसेरा यह गजल

जब विषैला हो नदी का नीर
कौन सुनता है लहर की पीर

डाकिया लौटा गया है पत्र
बात छोटी है मगर गंभीर

सभ्यता मुंह पर मले हैं लोग
आप की ही कौन-सी तस्वीर

ढल गया रूप वाटिका का है
यह प्रथम दृश्य नाटिका का है

है वशीयत किसी महाकवि की
दर्द का हक अनामिका का है

एक दीपक जला दिया मैंने
पर्वतो दीपमालिका का है

तट पर नाव नहीं
कोई गांव नहीं

दुखता सारा तन
लेकिन घाव नहीं

जाड़े का मौसम
कहीं अलाव नहीं

तप्त हृदय, स्मृति तरल तुम्हारी
छली हंसी, छवि सरल तुम्हारी

पावस के प्रतिबिंबों वाली
प्रकृति कर रही नकल तुम्हारी

कैसे आज विदाई मांगू
आंखें हैं फिर सजल तुम्हारी

तू मेरे मन में बसी जैसे जल में चांद
जीवन में यौवन रहे यौवन में उन्माद

जैसे खिले गुलाब पर कोई लिखे किताब
सुबह-सुबह की धूप-सी आई तेरी याद

अधरों पर कामायनी दृग में ऋतु संहार
पद्मावत मैंने पढ़ी फिर वर्षों के बाद

प्यार की याचना नहीं करना
जो मिले तो मना नहीं करना

भार से लेखनी झुकी-सी है
अब नई कल्पना नहीं करना

देवता नींद में सुनेगा क्या
व्यर्थ आराधना नहीं करना

प्रार्थना, आराधना की घंटियां
ये किसी की साधना की घंटियां

बज रही हैं आज तो चारों तरफ
न्याय की अवमानना की घंटियां

वेद - मंत्रों से स्तवन करते अधर
पांव में हैं वासना की घंटियां

प्रीति भरी हर बांह नहीं
जहां चाह, अब राह नहीं

जीवन के इस जंगल में
पेड़ बहुत हैं, छांह नहीं

मन तो ऐसा सागर है
जिसके जल की थाह नहीं

फूल की मुस्क्यान पर मिटता रहा सूरज
ज्योति के जयगान पर मिटता रहा सूरज

पूर्व से पश्चिम गगन को नापता प्रतिदिन
सत्य के संधान पर मिटता रहा सूरज

जलधि के छूकर चरण क्या मांगता मन में
अग्नि के आह्वान पर मिटता रहा सूरज

बाढ़ में कटते हुए संगम बहुत देखे
इस नदी ने बदलते मौसम बहुत देखे

एक थी सीता, अहल्या-सी शिला लेकिन
त्रासदी ने राम औ' गौतम बहुत देखे

ठीक से दर्पण पकड़ना सीख लो पहले
रूप के सपने सभी ने कम-बहुत देखे

मन है बहुत उदास तेरे दर्शन के लिए
रखता हूं उपवास तेरे दर्शन के लिए

वन में खिलते फूल बहती जंगल में नदी
झुकता है आकाश तेरे दर्शन के लिए

खोले पलक-कपाट भीगी आंखें रात-दिन
झेल रहीं संत्रास तेरे दर्शन के लिए

मेघ बन कर छाइए बरसात में
इस शहर में आइए बरसात में

आइने में झील के अपना वदन
देखिए, दिखलाइए बरसात में

द्रौपदी-सी नग्न डालों की व्यथा
कृष्ण तक पहुंचाइए बरसात में

मेघ-सा हर दर्द को पीते रहे
इन्द्रधनुषों के लिए जीते रहे

किस इरादे से बही होगी हवा
फल बगीचे के बहुत तीते रहे

बन्द होने को हुई हैं धड़कनें
हम अभी तक घाव ही सीते रहे

यह गजल आज कृष्ण की गीता
यह अपर्णा, अशोकवन - सीता

मृत्यु आई न बन सका शिव ही
कौन-सा मैं रहा गरल पीता

अग्नि की फिर उठी तरंगें हैं
तीन दिन आज राम का बीता

रात की साड़ी गुलाबी हो गयी
हर किरण अब इंकलाबी हो गयी

यान-सा टकरा गया हूं आप से
देखता हूं क्या खराबी हो गयी

मंत्र बिखरे और टूटे हैं चषक
यज्ञशाला भी शराबी हो गयी

वेदना का धुआं, पीड़ा का उजाला है
दर्द की वेदी, सृजन की यज्ञशाला है

क्रौंच-बध होने लगा है हर गली में
आज का बाल्मीकि कितना भाग्यवाला है

शब्द मुख रुद्राक्ष देखे हैं यहां किसने
गगन में बिखरी हुई यह कौन माला है

शब्द के विषधर फंसाता हूं
मैं कलम से आज गाता हूं

खुद तुम्हारा चेहरा क्या है
लो, तुम्हें दर्पण दिखाता हूं

एक न्यायाधीश हूं मैं यह
बात अक्सर भूल जाता हूं

समय का यह सोमरस पीना किसे आया
जी रहे हैं सब मगर जीना किसे आया

मच गयी उस रात तो बारात में हलचल
कफ़न-सा यह आवरण झीना किसे आया

डालियों का संकलन ही तरु नहीं होता
फूल-सा टूटा हृदय सीना किसे आया

स्वर का दिया सहारा
तूने मुझे पुकारा

क्या पत्र में लिखूं मैं
क्या है पता हमारा

है लेखनी नदी की
यह नवल गजल-धारा

हर विहग को गान कोई चाहिए
अब यहां तूफान कोई चाहिए

समय का सागर चुनौती दे रहा
फिर हमें हनुमान कोई चाहिए

मुद्रिका खोयी यहां मिलती नहीं
अब नथी पहचान कोई चाहिए

□□